जीवन गीत

महर्षि दयानंद सरस्वती की पद्यमय जीवन - गाथा

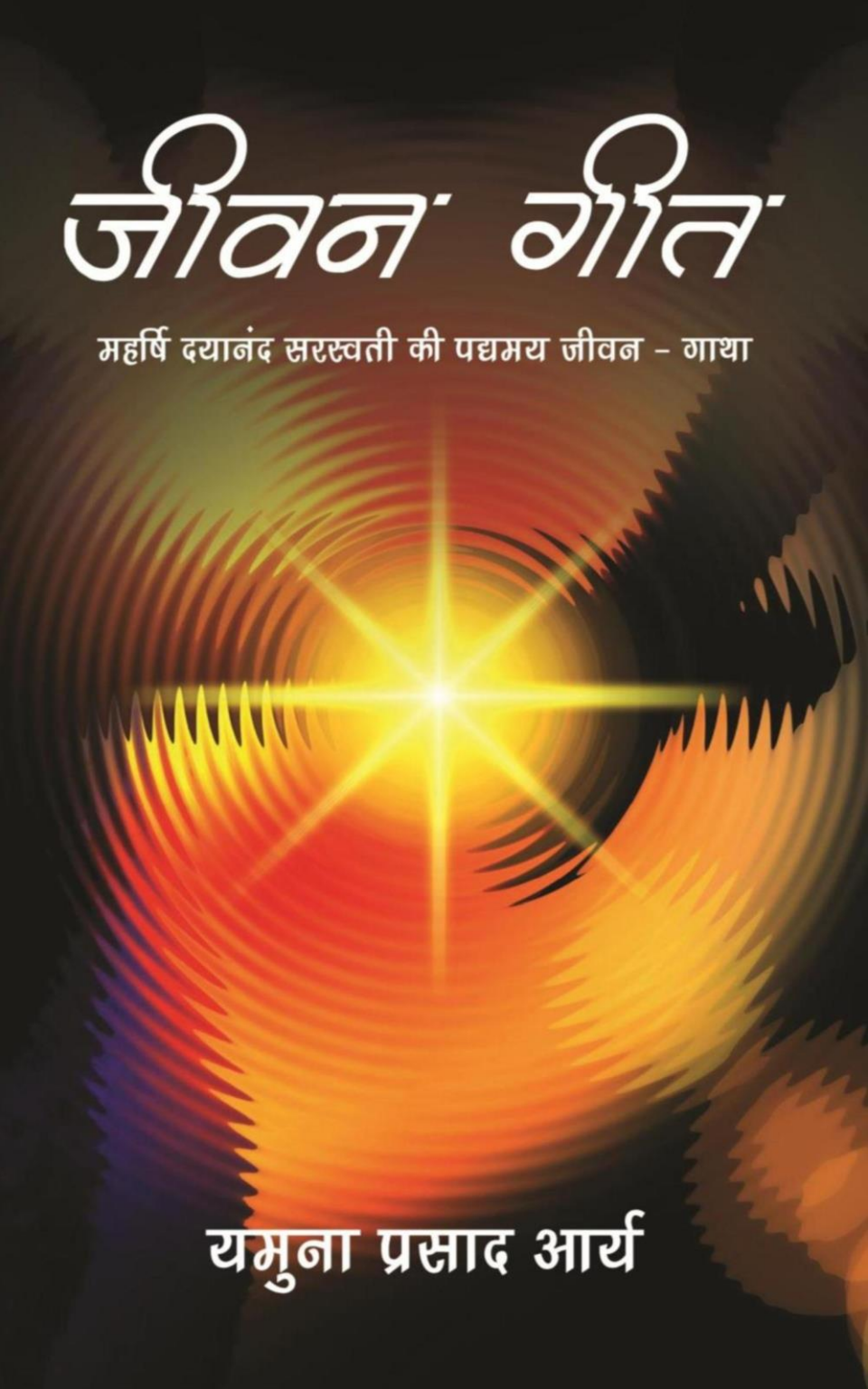

यमुना प्रसाद आर्य

जीवन गीत

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.fspmedia.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-93-6026-318-8

Price: ₹ 398.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher.

Printed in India

जीवन गीत

महर्षि दयानंद सरस्वती की
पद्यमय जीवन.गाथा

यमुना प्रसाद आर्य

प्रथम संस्करण

विक्रम संवत : २०७३

सृष्टी संवत : १९६०५३११७

दयानन्दोब्द : १९३

प्राण दायक है जिस तरह हिमालय की बूटी
"संजीवनी"
उसी तरह हर पाठक को ज्ञानवर्धक हो
"महर्षि की जीवनी"

॥ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेंणयम,
भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नःप्रचोदयात ॥

भावार्थ : हे सच्चिदानंद,प्रकाशकों के प्रकाशक, पापनाशक परमात्मा, हम आपके तेज का ध्यान करते हैं | आप हमारी बुध्दि और कर्मों को उत्तम प्रेरणा करें तथा बुरे कर्मों से छुडाकर अच्छे कर्मों पर प्रवृत करें | ::यजुर्वेद ३६/३

पुस्तक के बारे में

यह पुस्तक महर्षि दयानंद सरस्वती के जीवन पर आधारित, कविता के रूप में प्रस्तुत है | आज के युवाओं के लिए ये पुस्तक एक मार्गदर्शक है | यह काव्य सार कवि की ओर से स्वामी दयानंद सरस्वती के जीवन लिए श्रधांजलि है | इस पुस्तक के द्वारा महर्षि दयानंद सरस्वती के विचार और मानवता का सन्देश जन-जन तक पहुंचे, ऐसा रचनाकार का एक सफल प्रयास है |

मेरी अपनी दो बातें

सन १९५४ ई० में मै बैंक में बहाल हुआ | कुल तीस साल मैंने बैंक की सेवा की और सन १९८४ ई० में बैंक के शाखा प्रबंधक के पद से रिटायर्ड हुआ |

इन सालों में मैंने यही अनुभव किया कि आज के जमाने के बजाय वो वक्त ज्यादा खुशहाल था | इंसान और पैसे दोनों की कीमत थी | प्रत्येक व्यक्ति के दिल में प्यार था और भावनात्मक लगाव होता था | उस समय थोड़े पैसों में ही आराम से गुजारा हो जाता था | तांबा का पैसा प्रचलन में था | ६४ पैसे का १ रूपया होता था जो कि शुद्ध चांदी का होता था | इस समय इसकी कीमत १००० रूपये के करीब है | किन्तु आज न ही इंसान की कीमत है और न पैसे की | ये समय का बड़ा परिवर्तन मैंने अपनी जिन्दगी में देखा है |

अवकाश प्राप्त के बाद मैं पिता के संस्कार स्वरुप आर्य समाज से जुड़ गया | अनेक पदों पर आसीन होकर आर्य समाज की सेवा की | प्रस्तुत पुस्तक मैंने इसी अवधि में लिखी | पुस्तक लिखने में मैंने पूरे परिश्रम और लगन से काम लिया | इसी बीच पुणे में मुझे १८ नवम्बर २०११ को विश्वमाता फाउंडेशन के संस्थापक अध्यक्ष श्री शिवाजी घाडगे द्वारा "मेरी माँ" नामक कविताओं के उत्कृष्ट होने पर "आदर्श पिता गौरव" पुरस्कार से भारी जनसभा के बीच नवाज़ा गया तथा माला पहनाकर, शाल और प्रशस्ति पत्र

के साथ नारियल देकर मुझे करतल ध्वनि के साथ सम्मानित किया गया |

मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक हर वर्ग के लोगों तथा आर्य समाज एवं परिवार में सदस्यों के द्वारा पसंद की जायेगी |

प्रकाशक महोदय तथा स्टाफ परिवार को तहे दिल से धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने इसे प्रकाशित कर मुझे प्रसन्नता प्रदान की |

सुल्तानपुर, दिल्ली
तिथि :

यमुना प्रसाद आर्य
(भूतपूर्व मंत्री,आर्य समाज, भूतपूर्व सचिव, आर्य कन्या उच्च विद्यालय, खगरिया)

निवेदन

मुझे आज बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि मेरी वर्षों पहले लिखी गयी यह पद्यमय जीवनी "महर्षि दयानंद सरस्वती" की जीवन गाथा अब मेरे पुत्र और पुत्रवधु के अथक प्रयास और प्रेरणा से प्रकाशित होकर आपके समक्ष है |

इस पुस्तक से पहले मेरी दो रचनाएँ छप चुकी हैं | जो जीवन गीत (प्रथम पुष्प) और जीवन गीत (द्वितीय पुष्प) के नाम से है, और आज मेरी यह तीसरी पुस्तक आपके समक्ष है |

अत्यंत उत्साह और लगन से लिखी गयी इस पुस्तक में कुछ शाब्दिक त्रुटियाँ हो सकती हैं | यह पुस्तक स्वामी दयानंद सरस्वती की जीवन शैली पर आधारित है अतः आपसे आग्रह है इसे अत्यंत रोचक और ज्ञानवर्धक समझते हुए पढ़ें और यही मेरी मनोकामना है |

धन्यवाद् |

विनीत:-

यमुना प्रसाद आर्य

विश्वमाला फाउंडेशन

आदर्श पिता गौरव पुरस्कार

सन्मानपत्र

"मेरी माँ" कविता के लिए "**आदर्श पिता गौरव पुरस्कार"** से दिनांक १८ नवम्बर २०११,पुणे में सम्मानित हुए |

मेरी माँ

(पुरष्कृत कविता)

(१)

माँ, तुम कितनी निर्मल, कितनी,कोमल,
यह कैसे बतलाऊं माँ !
तुमने मुझको जन्म दिया है,
कैसे ऋण चुकाऊं माँ !
तुमने मुझको पाला पोसा, चूम चूम कर बड़ा किया |
हाथ पकड़ कर ठुमक ठुमक कर,
तुमने मुझको खड़ा किया |
जब जब मैं गिर गिर पड़ता,
उठा कर तूने चूमा माँ |
रोया जब सिसक सिसक कर, तूने फिर पुचकारा माँ |
अब पढ लिख कर बड़ा हुआ हूँ,
दुःख नहीं उठाने दूंगा |
तुम जो मेरी सेवा करती,
अब नहीं कुछ करने दूंगा |
तुम हो भारत माँ सदृश्या, चरणों में शीश झुकाऊं माँ |
तुमने मुझको जन्म दिया है, कैसे ऋण चुकाऊं माँ !

(२)

(गर्भ में पल रही एक बेटी की सिसकती वाणी)

माँ, बड़े प्यार से मैं तेरे गर्भ में आई,
पिता का प्यार पाऊँगी, मैं मुस्काई,

संतान ही माता पिता की धरोहर होती,
बेटियां धरोहर ही नहीं, जौहर होती |

यही सोच कर मैं फूली नहीं समाती हूँ,
मैं गर्भ में सुरक्षित हूँ मग्न में सो जाती हूँ |

मैं जब आउंगी माँ, तेरे हाथ से खाना खाऊँगी,
पिता जी पुकारेंगे, मैं ठुमक कर चली जाउंगी |

पर सुनती हूँ कुछ निर्दयी माँ भी होती है,
जिन्हें बेटियों से बढ़कर बेटों की चाहत होती है |

माँ-बाप के मिलन से ही बीटा बेटी होते हैं पैदा,
ऊपर वाले जो दे दे वही पक्का सौदा |

फिर मानव क्यों बेटा बेटी में भेद करते हैं !
जब उन्हें कोई संतान न होती तो खेद करते हैं |

कुछ पिता बेटी से बढ़ कर बेटा को तरजीह देते हैं,
यह सोच कितनी गलत है जान कर भी भूल करते हैं |

माँ, मुझे भूमी पर आने देना, सबका प्यार पाने देना,
नाम करुँगी, काम करुँगी
जीवन भर मैं तुमको प्यार करुँगी |

महर्षि दयानंद सरस्वती की वंशा-वली

जीवन गीत

६३ वर्षीय, पूज्य श्री यमुना प्रसाद आर्य एक मर्मस्पर्शीय, सुकोमल हृदय के कवि हैं! वे बैंकिंग सेवा में एक सफल बैंक प्रबंधक के पद से सेवा निवृत हुए! यों तो जीवन के शैशव काल से ही कविता की रचना करते रहें हैं तथा महर्षि दयानंद सरस्वती जी की जीवनी कृत्व से ओत–प्रोत, आर्य समाज के प्रति उत्थान एवं समर्पण, वैदिक प्रचार – प्रसार में कार्यरत के परिणाम स्वरुप प्रस्तुत कविता इनके जीवन की एक अनूठी, हृदय ग्राही एवं सराहनीय रचना है!

इनके आर्य समाज के प्रति कर्मठता, त्याग, ईमानदारी और निःस्वार्थ सेवा ने इन्हें मंत्री, प्रधान एवं आर्य कन्या उच्च विद्यालय, खगरिया के सचिव पद पर सुशोभित किया!

प्रस्तुत रचना काव्य सभी वर्गों, छात्रों, समाज सेवी एवं धर्म प्रेमियों के लिए पथ प्रदर्शक है!

लेखक से संपर्क हेतु :
amita_soni88@yahoo.com

FSP
FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE
Flipkart
GET IT ON Google Play
amazon
amazonkindle

EBOOK AVAILABLE
ISBN 978-93-6026-318-8
9 789360 263188